# मलेरिया की दवा का बाज़ार और नवाचार

मलेरिया दुनिया भर में प्रति वर्ष करीब 5 लाख लोगों की जान लेता है। कुछ दवाइयां अब मलेरिया परजीवी पर असरदार नहीं रहीं। आर्टिमिसिनीन, जिसके लिए चीनी वैज्ञानिक यूयूतू को नोबेल पुरस्कार मिल चुका है, एक कारगर दवा है और एक पौधे से प्राप्त की जाती है। ऐसे में यह स्वागत योग्य था कि इस दवा को प्रयोगशाला में बनाने की विधि खोज ली गई है। मगर हालत यह है कि कृत्रिम रूप से आर्टिमिसिनीन बनाने का कारखाना बंद पड़ा है और इसे चलाने वाली कंपनी इसे बेचने की फिराक में है।

आखिर ऐसा क्यों है? दरअसल, मलेरिया से लड़ाई को आगे बढ़ाते हुए बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन ने सैनोफी नामक कंपनी को आर्टिमिसिनीन का कृत्रिम रूप बनाने के लिए 6.4 करोड़ डॉलर का अनुदान दिया था। सैनोफी ने एक ऐसा खमीर (यीस्ट) तैयार करने में सफलता प्राप्त कर ली जो आर्टिमिसिनीन जैसे पदार्थ बना सकता है। यह हो जाने के बाद सैनोफी ने तय किया कि वह इस पदार्थ के उत्पादन के लिए कारखाना स्थापित करेगी। उसका इरादा था कि वह खुद तो दवाई बनाएगी ही, अन्य कंपनियों को यह पदार्थ बेचेगी भी ताकि वे भी दवा बनाकर बेच सकें।

मगर यह कारखाना बमुश्किल 1 साल चला। पिछले वर्ष इसने कोई उत्पादन नहीं किया जबकि कारखाने की क्षमता 6 करोड़ टन है। कुल मिलाकर सैनोफी ने संश्लेषित आर्टिमिसिनीन का जितना उत्पादन किया है वह 3.9 करोड़ खुराक के लिए काफी है।

आर्टिमिसिनीन बाज़ार का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों ने समस्या का विश्लेषण करके कई बातें प्रस्तुत की हैं। जैसे, एक बात तो यह पता चली है कि पौधों से प्राप्त आर्टिमिसिनीन की उपलब्धता में काफी उतार-चढ़ाव होते रहते हैं, जिसकी वजह से कीमतों में उतार-चढ़ाव आते हैं। यदि कुदरती आर्टिमिसिनीन सस्ता होगा तो अन्य कंपनियां सैनोफी का माल क्यों खरीदेंगी।

एक और समस्या यह नज़र आई है कि सैनोफी सिर्फ यह पदार्थ नहीं बेचती बल्कि तैयारशुदा दवाई भी बेचती है। अन्य कंपनियां उसे एक प्रतिस्पर्धी मानती हैं। तो वे अपने प्रतिस्पर्धी के साथ कारोबार करना नहीं चाहतीं।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले वर्षों में मलेरिया से लड़ाई में काफी प्रगति हुई है। एक तो यह हुआ है कि जहां पहले हर बुखार के लिए मलेरिया की दवा दे दी जाती थी, वहीं अब कोशिश होती है कि उचित निदान के बाद ही मलेरिया-रोधी दवा दी जाए ताकि प्रतिरोध की समस्या पर अंकुश लगे। इस वजह से मलेरिया की दवा की मांग में कमी आई है। इसके अलावा मलेरिया के खिलाफ अन्य कदम (रोकथाम के कदम) के चलते भी दवा की मांग में कमी आने की संभावना है।

बहरहाल, इस टेक्नॉलॉजी ने दवा उत्पादन की नई संभावनाएं खोली हैं, जो शायद दवाइयों को सस्ता बनाने में मदद करेगी। ***(स्रोत फीचर्स)***